आज़ाद फाउण्डेशन

आज़ाद परिंदे

न्यूज़लेटर (सीमित वितरण हेतु) आज़ाद फाउण्डेशन, वर्ष 2021 अंक 18

"जब तक महिला अपनी चुप्पी नहीं तोड़ेंगी, अपने दबी हुई चिंगारी को हवा नहीं देगी। तब तक वह अपने जीवन को दिशा नहीं दे पाएंगी। औरतों को अपना आत्मसम्मान जगाना होगा, फिर देखों वह क्या नहीं कर सकती।"

सलाम, नमस्ते!

मैं आज़ाद फाउण्डेशन से 4 साल पहले यानी 2017 में FLP के रूप में जुड़ी। आज़ाद से मैंने FLP का कोर्स किया जिससे मुझे समाज में जीने की दिशा दिखी क्योंकि समाज में महिलाओं का स्तर बहुत निचला है उनकी भावनाओं का हनन होता है, इसी बात को नकारते हुए आज़ाद नारीवादी नेतृत्व कार्यक्रम करवाता है जो मैंने भी किया, इस कोर्स के दौरान मैं अपने समुदाय में एक लीडर के रूप में उभरी। FLP प्रोग्राम खत्म होने पर आज़ाद टीम के साथ मिलकर काम करने लगी, अब मैं आज़ाद के कार्यक्रम www प्रोग्राम में मोबिलाइज़र के पद पर नियुक्त हूँ। महिला चाहे तो क्या नहीं कर सकती बस उसको ज़रूरत है अपने सीने में एक चिंगारी जलाने की, फिर सारी दुनिया उसकी मुट्ठी में आ जाती है। मैं आज़ाद से पहले बहुत सहमी हुई लड़की थी पर आज़ाद ने मुझे अपने जीवन में बहुत बदलाव करना सिखाया, बदलाव मैंने खुद ही किए, पर दिशा आज़ाद ने दी। अब मैं आज़ाद महिला हूँ और आज़ादी से जीने का हुनर सबको देती हूँ, पुरुषों को मैं गलत नहीं कहती पर उनकी चलाई जाने वाली सत्ता को नकारती हूँ। मैं हर महिला से कहना चाहती हूँ की वह सीधा और शरीफ बनना छोड़ दे समाज ऐसी ही महिलाओं को अपना शिकार बनाता है, जब तक महिला अपनी चुप्पी नहीं तोड़ेंगी तब तक वह अपने जीवन को एक रेंगते हुए कीड़े के भांति जीती रहेंगी और यही बात एक पुरुष चाहता है। अपने जीवन में संघर्ष समाज की हर महिला कर सकती है बस थोड़े साहस की ज़रूरत है, समाज का काम डराना है जो इससे डर गया वह उसका शिकार बन जाता है। इसी डर को मैंने अपने जीवन से हटाया हैं और अपनी पहचान बनाने के लिए बहुत संघर्ष किए है। इस सारे दौर में मेरी अम्मी ने मुझे बहुत सपोर्ट किया वह समय मेरे लिए बहुत संघर्षपूर्ण था मैंने समाज की कई बातों का सामना भी किया है जो कि समाज की हर महिला को करना पड़ता है जब वह कुछ करने की आशा लिए घर दहलिज़ लाघंती है। FLP कोर्स में 8 दिन अकेले जाना होता था उस समय मोहल्ले वालों और रिश्तेदारों ने मुझे काफी गलत समझा और बुरा भला बोला। पर यही सारी बातें मुझे ताकत देती थी, अपनी कठिनाईयों का सामना करने के लिए और अपने सभी भूमिकाओं को अच्छे नेता की तरह निभाया है और अपने काम को कभी हार न मानते पूरे जोश के साथ किया। अब में खुद को आज़ाद महसूस करती हूँ।

फिरदौस ज़ेहरा, मोबिलाइज़र, दिल्ली

लॉक डाउन के दौरान महिलाओं पर बढ़ते काम का बोझ कम करने के लिए कैसे मैंने युवा ग्रुप के लड़कों को घर के काम करने के लिए लीड किया, आज वो अनुभव आप के साथ साझा कर रहा हूँ। यह लॉकडाउन महिलाओं के लिए दोहरी समस्याएं और बंदिशें लेकर आया। जिसमें महिलाओं के साथ घर में सभी के रहने से घर के कार्यों में भी बढ़ोतरी हुई साथ ही उनके साथ हिंसा भी बढ़ी। कोरोना और लॉकडाउन का असर जहां लोगों के स्वास्थ्य पर पड़ा, इसकी वजह से महिलाओं पर हिंसा में बढ़ोतरी देखी गई है, उन पर काम का बोझ भी बढ़ गया है। साथ ही लड़कियों की पढ़ाई भी छूटी है, जिससे उन पर काम का बोझ भी बढ़ गया है।

आज़ाद मेन फॉर जेंडर जस्टिस कार्यक्रम के द्वारा पिछले कई सालों से बस्ती के लड़कों के साथ जेंडर समानता, मर्दानगी के मुद्दे, घरेलू हिंसा और अनपेड केयर वर्क पर काम कर रही है। लॉकडाउन के दौरान हमने अलग-अलग बस्ती के युवा ग्रुप के लड़कों का वाट्सअप ग्रुप में अनपेड केयर वर्क पर चर्चा शुरू की, उनसे पूछा कि कितने लडकों ने अपनी माँ, बीवी, बेटी और बहन को घर के काम में बराबरी का योगदान दिया है। कितने लडकों ने कहा कि तुम बर्तन कर लो मैं झाडू पोछा कर देता हूँ। कितने लडकों ने कहा कि तुम खाना बना लो, मैं कपड़े धो देता हूँ।

इससे पहले भी सभी लडकों के साथ अनपेड केयर वर्क पर ट्रेनिंग हो चुकी थी। लड़के तैयार हुए घर के काम करने के लिए मैंने सभी से कहा यह अच्छा समय है माताओं और बहनों के साथ रिश्ता मज़बूत करने के लिए हम सब को मिलकर काम करना होगा। उनकी माताओं से समय-समय से बात-चीत की, साथ ही उनको घर के काम करने के लिए कुछ टास्क दिए गए जैसे कि आज घर में आप को ही आटा लगाना है और रोटियां बनानी है, एक दिन आपको परिवार के सभी सदस्यों के कपड़े धोने है, साफ सफाई और बर्तन धोना इत्यादि। कुछ लड़को ने घर पर काम की शुरुआत की, घर का काम हम सब का काम लोगों के व्यवहार में परिवर्तन करना और बदलाव करना भी एक लीडर की पहचान है।

● आकाश पालीवाल, प्रोग्राम एसोसिएट, एम.जी.जे., जयपुर

मैं पिछले 12 सालों से लीडरशिप शब्द को जानती हूँ। लेकिन अब पिछले दो सालों से आज़ाद फाउण्डेशन में एफएलपी सदस्य के रूप में जुड़ी हुई हूँ। मैंने यहां पर कई प्रशिक्षण लिए हैं जिनमें मेरी ज़िन्दगी नहीं बल्कि मेरे पड़ोस की महिलाओं के जीवन पर भी असर पड़ा है मैं आज़ाद फाउण्डेशन से जुड़ने के बाद खुद को आत्मनिर्भर महसूस करती हूँ और मेरी पूरी कोशिश है कि मैं अपने इलाके की लड़कियों और महिलाओं को भी आत्मनिर्भर बना सकूं। मैंने कई महिला और युवा समूह बनाए हैं जिनका मैं नेतृत्व करती हूँ। पुलिस स्टेशन, स्कूल, पार्टी ऑफिस और दूसरे सरकारी दफ्तरों में भी जाकर उनकी सहायता करती हूँ। कोविड में जब सब परेशानियों से जूझ रहे थे, बहुत लोगों की नौकरियाँ नहीं थीं तब हमने सभी के खाने की व्यवस्था कराई। कोविड के दौरान मैंने अपने समुदाय में बहुत जागरूकता फैलाई। ज़रूरतमन्द लोगों की मदद करने में मुझे बहुत खुशी मिलती है। मैं उन परिवारों की मुस्कान को कभी नहीं भूल सकती जिनकी ज़रूरतों को मैं पूरा कर सकी।

● असगरी खातून, FLP, कोलकाता

2019 में कारोना नाम की जानलेवा बीमारी की शुरुआत हुई और इसी कारण इसका नाम कोविड-19 दिया गया। यह बीमारी और ना फैले इसलिए स्वास्थ्य विभाग ने लोगों को घर पर रहने के लिए कहा। जब यह करोना वायरस और देशों में फैलने लगा तो लोगों की मृत्यु होने लगी। सभी स्कूल, कॉलेज, आवागमन के साधन और धार्मिक स्थल, सरकारी और गैर सरकारी दफ्तर बंद हो गए। लोगों की सामान्य जिंदगी प्रभावित होने लगी, ना रोज़गार रहा ना आमदनी। हम सबको यह डर था की बीमारी से पहले हम भूखे मर जायेंगे, लेकिन हम अपने बच्चों की लिए जीना चाहते थे। कहने को घर के कामकाज बढ़ गए थे लेकिन हमने सफ़ाई को ध्यान में रखा ताकि हमारा परिवार कोरोना से बच सके। तमिलनाडु सरकार स्वयंसेवकों, एनजीओ और कुछ नेक दिल इंसानों की मदद पाकर हम भूखे मरने से बचे रहे। करोना की वजह से मानव जाति एक जुट हो गई और इस प्रकार समाज का नेतृत्व हो पाया।

● सत्या, ट्रेनी, चेन्नई

आज कोई छाया में बैठा है क्योंकि किसी ने बहुत समय पहले एक पेड़ लगाया था।
- वारेन बफेट

समावेशी और अनुकंपा नेतृत्व

एक लीडर जो सोचता है, उस पर विश्वास करता है और वो पूरा करता है।
- नेपोलियन हिल

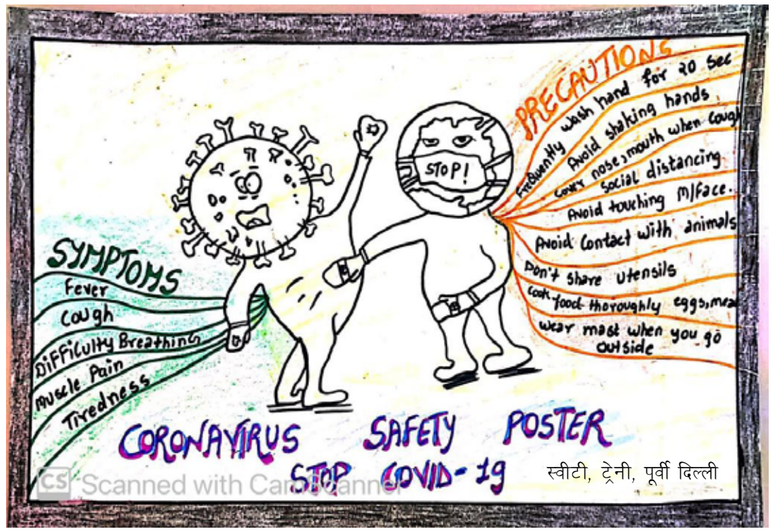

स्वीटी, ट्रेनी, पूर्वी दिल्ली

घर का नेतृत्व

मैं अपने घर में मम्मी को लीडर मानती हूँ क्योंकि मेरी मम्मी ने बहुत कुछ देखा लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी अपने दम पर घर बनाया पापा को ऑटो (गाड़ी) दिलवाई पर ऑटो तो ना रहा क्योंकि मेरे पापा शराब पीते थे। मेरा भाई ने भी बहुत तंग किया, काम नहीं करता मेरी मम्मी ने फिर भी हिम्मत नहीं हारी। आज मेरी मम्मी खुद कमा कर अपना खर्चा चला रही है और मेरी भी मदद कर रही है मेरे भाई-भाभी को भी खिला रही है। मेरे लिए मेरी मम्मी लीडर है। मैं अपनी मम्मी के घर रहती हूँ और मैं अपनी मम्मी की तरह बनना चाहती हूँ उनकी तरह अपना घर लेना चाहती हूँ। मेरे पति हैण्डीकैप में आते हैं इसीलिए दबाव में रहते हैं। इसीलिए मेरा जेठ मेरे बच्चे तक लेकर चला गया। मुझे अब खुलकर जीना है। जब मैं आज़ाद आई तो अन्दर से बहुत टूट चुकी थी, परेशान भी थी अभी भी हूँ। लेकिन जब मेरी नौकरी लग जाएगी तक मेरी सारी परेशानी दूर हो जाएगी मेरे बच्चों को भी आज़ादी जीने का मौका मिलेगा उन्हें अपने मम्मी-पापा की तरह डर-डरकर जीना नहीं पड़ेगा।

● नैना, ट्रेनी, दक्षिणी दिल्ली

इंसानियत के आगे भी

करोना काल में लोगों के साथ-साथ जानवरों को भी बहुत सी परेशानियों का सामना करना पड़ा। हमारे तरफ आसपास के लोग सिर्फ इंसानों को ही ज़्यादा महत्व दे रहे थे। नेता और अन्य लोगों ने सिर्फ बस्तियों को ही खाना खिलाया परंतु मुझे ऐसा लगा कि जानवरों को भी जिंदगी जीने का अधिकार है वे भी एक इंसान की तरह जीने का अधिकार रखते हैं। सबसे ज़्यादा खतरा जानवरों को भी है यह बात मुझे तब पता लगी जब मैंने न्यूज में यह देखा कि हांगकांग में एक कुत्ते और बेल्जियम की एक बिल्ली को कोविड-19 पॉजिटिव पाया गया। मुझे यह न्यूज देख कर बहुत ही आश्चर्य हुआ तभी से मैंने कुत्तों तथा अन्य जानवरो के बारे में सोचा कि मैं भी इनके लिए कुछ कर सकती हूँ। मैंने अपने इलाके की गलियों के कुत्तों को बिस्किट तथा दूध की सहायता प्रदान की। इस लॉकडाउन में मैंने यह महसूस किया कि एक इंसान ही अपनी खुशियों को व्यक्त नहीं कर सकता बल्कि एक जानवर भी अपनी खुशी व्यक्त कर सकता है। फिर मैं हर रोज उनके लिए खाना ले जाती और वो मुझे देख के अलग-अलग प्रकार से अपनी खुशी व्यक्त करते थे।

● दीक्षा नायक, ट्रेनी, जयपुर

नेतृत्व के बदलते आयाम

लीडरशिप का मतलब है पूरी जिम्मेदारी के साथ काम करना और कभी भी दूसरों के साथ खड़ा होना। लॉकडाउन के समय समुदाय के लोगों को तरह तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ा। कोरोना पीड़ित लोग मजबूर थे और उनके पास एक वक्त के खाने के लिए तक कुछ नहीं बचा। कोरोना की दिन बा दिन दर बढ़ रही थी और लोग इससे प्रभावित हो रहे थे। बहुत से लागों की नौकरियाँ चली गईं और बेरोज़गार हो गए। ऐसे वक्त में आज़ाद फाउण्डेशन और सरकार ने लोगों उकी मदद की। आज़ाद फाउण्डेशन के सदस्यों ने फार्म करे। मुझे लगता है हमें एक दूसरे की हमेशा मदद करना चाहिए।

अगर हम अंदर से मजबूत हैं तो कोई भी चुनौतीपूर्ण हालात से डरने के बजाए उसका सामना कर सकते हैं यह हमने आज़ाद फाउण्डेशन के सदस्यों से सीखा है। अगर हम सामूहिक तौर पर काम करते हैं तो बहुत सी समस्याओं को सुलझा सकते हैं।

● पूजा शी, ट्रेनी, कोलकाता

कोरोना ने दी सीख!

ऑफिस और मीटिंगों में हिस्सा लेना कभी मुश्किल नहीं था।
लेकिन कोरोना ने हमें एहसास दिलाया कि ये सब होना था।।
ज़ूम मीटिंग सीखा जिससे बिल्कुल अनजान थे।
जानकारी भी जुटाना सीखा हमने फोन से।।
अनुभव और एहसास, दानों कितने थे नए।
सामाजिक दूरी को रख ध्यान में अपने पड़ोसियों संग रहे खड़े।।

● नूरजहां, ट्रेनी (कोलकाता)

समावेशी और अनुकंपा नेता समझते हैं कि वे चाहे कितना भी जानकार, अनुभवी और ज्ञानी क्यों न हों, वे अभी भी अन्य बुद्धिमान लोगों से घिरे हुए हैं जो ऐसे विचारों से भरे हुए हैं जो उनके कौशल और ज्ञान को और अधिक प्रभावी ढंग से नेतृत्व करने के लिए बढ़ा सकते हैं।

किसी संगठन या इंसान के मार्गदर्शन करने की क्षमता को नेतृत्व (लीडरशिप) कहा जाता है। सभी को साथ लेकर चलना और प्रभावी बनने के लिए उन्हें संगठित करना। खुद का कर्तव्य निभाना। सभी की समस्याओं का समाधान या हल करने में उनकी मदद करना। अपने आप को एक आदर्श के रूप में तैयार करना।

● विशाखा परमन्या, ट्रेनी, चेन्नई

लॉकडाउन में बहुत परेशानी हुई थी। व्यापार में घाटा होने की बजह से बहुत लोगों को पैसे भी नहीं मिले थे। क्योंकि तीन महीनों तक लॉकडाउन था तो लोगों को बहुत परेशानी उठानी पड़ी। मैंने घर के काम में हाथ बंटाया जैसे सब्जी लाना, सब्जी काटना, छोटे-छोटे काम किए। लॉकडाउन में राशन लेकर आना, पड़ोसियों की भी मदद करना, उनका सामान लाकर देना किसी भी चीज़ की जानकारी देना और मैंने अपने दोस्तों की भी मदद की। अपने घर की परेशनी को देखकर मैंने कारपेंटर का दो महीने तक काम भी किया। मैंने अपने दोस्तों को भी काम करने के लिए बोला ताकि वो अपना खर्चा खुद उठा सकें। आज हम सभी साथ काम कर रहे हैं। लॉकडाउन में मुझे अपने दोस्त और पड़ोसी की मदद करके बहुत खुशी मिली।

● गौतम, एमजीजे, दिल्ली

कोविड में हमसफ़र...

लीडरशिप का मतलब है दूसरों की मदद करना और मुश्किल समय में लोगों के बीच खड़े रहना। लीडर्स को इस सच को स्वीकार करना चाहिए कि उनके तथ्य और उनकी बातें ही हमेशा सही नहीं होती बल्कि दूसरों के विचार हो सकते हैं। लोगों के साथ मिलकर काम करना, उनको सुनना और उनकी राय का सम्मान करना भी एक लीडर का गुण है। लीडरशिप का मतलब है एक प्रभावशाली समूह का मार्गदर्शन करना।

कोविड के दौरान मैंने अपने इलाके में हर एक परिवारों का एम फॉर्म भरा। आज़ाद फाउण्डेशन की मदद से हम कई लोगों तक राशन पहुँचा सके। दूसरे संगठनों की मदद से भी हमने ज़रूरत की चीज़ों को उन तक पहुँचाया। मैंने पार्षद से लिखित में आवेदन किया कि समुदाय के लोगों को राशन उपलब्ध कराया जाए। हमारे इलाके को ब्लीचिंग पाउडर और सैनिटाइजर से सैनिटाइज किया गया, कोविड से जुड़े जागरूकता कैंप भी आयोजित किए गए।

आज़ाद फाउण्डेशन ने बहुत से प्रशिक्षण दिए जिसने मुझे बहुत मदद मिली थी। मैंने बदले में अपने ज्ञान और अनुभवों से दूसरों के लिए उम्मीद की किरण दिखा दी। अब वो मेरी इज्ज़त करते हैं और मुझ पर निर्भर हैं। जब वो मुश्किल वक्त में होते हैं तो मेरे पास आते हैं क्योंकि वो जानते हैं कि निश्चित रूप से मैं उनकी मदद करूँगी, जब भी वो किसी परेशानी का सामना करेंगे। दूसरों की मदद करके मुझे बहुत संतुष्टि मिली। मैं आज़ाद फाउण्डेशन के सभी सदस्यों की आभारी हूँ। जिसकी वहज से यह सब मुमकिन हो सका।

● मौसमी दास, ट्रेनी, कोलकाता

हौसलों के आगे जहाँ बाक़ी है!

अभी तो असली मंज़िल पाना बाकी है।
अभी तो इरादों का इमत्हिान बाकी है।।
अभी तो तोली है मुट्ठी भर ज़मीन।
अभी तोलना सारा आसमान बाकी है।।

साल 2019-20 में कमला नेहरू विद्यालय में अपने अधिकार व जेंडर के प्रश्नों के माध्यम से मेरा चयन आज़ाद फाउण्डेशन में किया गया था, तब से हमें महामारी, जेंडर समानता, योजनाओं, स्वयं की पहचान, स्वयं के बारे में तथ्य निर्धारित करना आदि की ट्रेनिंग दी गई थी। ताकि हम आत्मनिर्भर, नारी सशक्तीकरण का प्रतीक बनें। इस प्रकार मैं लीडर बनी और लोगों की सहायता करने में सक्षम हो पाईं।

● योगिता कौहरवाल, आज़ाद किशोरी, जयपुर

अफ़सरी बेगम, एफएलपी, कोलकाता

शत-शत नमन!

कोरोना योद्धाओं के हौसलो को आओ मिलकर और बढ़ाएं।
जब सारी दुनिया खुद को बचाने में जुटी है तब ये जान पर खेल चीन की कर रहे चाल नाकाम
इनके हौसले से ही जीतेगे कोरोना की ये भीषण जंग
कोरोना योद्धाओं को दिल से करते है नमन।

● रूकसाना, ट्रेनी, पूर्वी दिल्ली

जब स्कूल बंद थे इसलिए हम ऑनलाइन पढ़ते थे।
जब घर में रहते थे तो पड़ोसी की मदद करते थे।
कोरोना में हम जब वेक्सीन लगवाने का हौसला देते थे।
कोरोना में घर से निकलना मुश्किल था।
और माता-पिता बाहर जाने नहीं देते थे।
कोरोना के टाइम में पानी लाना मुसीबत का काम था।

● सामी, एमजीजे, दिल्ली

कर्मठ नेता की पहचान

मेरी समझ से एक अच्छा नेता ऐसा होना चाहिए जो अपने कर्तव्य का पालन करे और अपने आस-पास होने वाली परेशानी की देखभाल करे। अपना सही फैसला ले और ज़रूरतमंद लोगों की मदद करने का वादा करे। जो व्यक्ति इस प्रकार के कार्य को पूरा करने के लिए आगे चले वही अच्छा नेता होता है।

मैं अपने आप को लीडर मानती हूँ क्योंकि मैं अपने घर के फैसले खुद लेती हूँ लॉकडाउन के समय मैंने फैसला लिया- मेरे पड़ास में रहने वाले पड़ोसी को सिलेंडर की परेशानी थी तो मैंने अपना सिलेंडर उन्हें देने का फैसला किया।

मैं अपने घर में अपनी मम्मी को भी लीडर मानती हूँ जो कभी भी नहीं किसी परेशानी का सामना करने से नहीं डरती। मैं अपने आपको उनके जैसा बनाना चाहती हूँ।

● चंदादेवी, ट्रेनी, दक्षिणी दिल्ली

कोरोना के समय हमने बस्ती और समुदाय के गरीबों की मदद की और उन्हें राशन के कूपन बारे में बताया। उनको बताया कि कौन से स्कूल में खाना बंट रहा है। हमने समुदाय में मास्क बांटे और सैनेटाईजर दिये। जिनका राशन कार्ड नहीं बन रहा था उनका राशन कार्ड बनवाया। इस प्रकार हमने समाज का और खुद का नेतृत्व किया।

● रिहाल, एमजीजे

अकेले हम बहुत कम कर सकते हैं, लेकिन हम सब मिलकर इतना कुछकर सकते हैं।
- हेलेन केलर

उत्तरदायी नेतृत्व

असली नेता को अपने लोगों की स्वतंत्रता के लिए सब कुछ बलिदा करने के लिए तैयार रहना चाहिए
- नेल्सन मंडेला

कोरोना महामारी लेकिन हिम्मत न हारी

लॉकडाउन क्या है मैं नहीं जानती थी। जब लॉकडाउन लगा तब मेरे पति की सैलरी २ महीने तक आती रही उसके बाद उनकी नौकरी चली गई। घर में काफी परेशानी होने लगी। सरकारी स्कूल से जो साल का पैसा मिला उससे घर चलाती थी। बच्चों के जन्मदिन के पैसे जोड़कर रखे थे। वो भी खर्च हो गए जब मेरी बेटी इस दुनिया में आई थी तब एक गुलक खरीदा था ताकि उसके नाम से पैसे डाल सकूँ। अब वो सात साल की है। दूसरे लॉकडाउन में मेरी सास दुनिया छोड़कर चली गई उनके क्रियाक्रम के लिए पैसे भी नहीं थे। तब मैंने बेटी की गुलक तोड़ दी से जिसमें से 45 हजार रूपये निकले, जिससे उनका क्रियाक्रम किया गया था।

● नीतू, ट्रेनी, दक्षिणी दिल्ली

जब से हमारे देश में कोरोना आया तो लोग बहुत परेशान हो गए हैं। कोरोना आने की वजह से संपूर्ण भारत में लॉकडाउन हो गया। जिस कारण देश में रहने वाले लोगों का रोज़गार छूट गया। जिसकी वजह से हम सभी लोगों को बहुत परेशानियों का सामना करना पडा। इस परेशानी के रहते हमारे मोनू भाई जो आज़ाद फाउण्डेशन से जुड़े हैं। उन्होंने हमें यह बताया कि इस समय हम लोगों की किस तरह मदद कर सकते हैं। मोनू भाई ने हमें बताया कि हम किस तरह लोगों को फ्री राशन दिला सकते हैं। हमने अपनी जानकारी के रहते जितने भी गरीब लोग थे उन सभी को फ्री राशन दिलवाने की पूरी कोशिश की और बहुत से गरीब लोगों को फ्री राशन दिलवाया।

● पूनित, एमजीजे, जयपुर

मेरी नज़र में एक नेता वो है जो सबकी मदद करे सबकी परेशानी समझे और अपने सिस्टम को बदल कर सबको समय दे। ज़रूरी नहीं है कि वो राजनैतिक नेता हो। नेता कोई भी बन सकता है।

कोरोना काल में मैंने कई लोगों की मदद की। ज़रूरी नहीं है कि राशन देकर ही मदद की जाए। मदद तो कैसे भी कर सकते है। हमारी कॉलोनी में काफी ऐसे लोग हैं जिनको राशन की बहुत ज़रूरत थी और उस समय कई जगह राशन मिल रहा था। उनको मैं अपने साथ लेकर गई और उनको राशन दिलाया और उनको जानकारी दी कि बार-बार हाथ धोना है मास्क लगाना है और दूरी बनाए रखना है सेनेटाईजर का इस्तेमाल करना है। मैंने अपना और अपने घर वालों का राशन भी ज़रूरतमंद लोगों को दिया। जितना हो सकता था उतनी मदद की लेकिन दूसरे लॉकडाउन में मैंने किसी की मदद नहीं क्योंकि मेरी और मेरे घर वालों की स्थिति खराब थी।

मेरी सोच मेरी मम्मी से मिलती है वह मेरी दोस्त जैसी हैं और मेरी मदद भी करती हैं मैं उन्हीं की तरह बनना चाहती हैं।

● तनु साहू, ट्रेनी, जयपुर

हमारी नज़र में नेता वह है जो दूसरे की मदद करता है जैसे कोविड-19 के दौरान हमने पड़ोसी की थोड़ी सी मदद की थी, उससे हमें बहुत खुशी हुई। जो राशन मुझे मिला उसे मैंने पड़ोसन को दे दिया था। क्योंकि उसे मेरे से ज़्यादा ज़रूरत थी। अगर मेरी नौकरी लग जाएगी तो मैं भी किसी की मदद कर सकती हूँ।

● राधा, ट्रेनी, जयपुर

एक नेता की पहचान

एक नेता सबका विकास करता है।
एक नेता काम को पहचान बनाता है।।
एक नेता लोगों को साथ लेकर चलता है।
एक नेता बदलाव करता है।।
एक नेता लोगों की मदद करता है।
एक नेता शिक्षा की ज्योत जलाता है।।
एक नेता सोते हुए लोगों को जगाता है।
एक नेता भेदभाव खत्म करता है।।
एक नेता कुरीतियों से लड़ता है।
एक नेता इंसानियत को धर्म मानता है।।
एक नेता रोटी, कपड़ा, मकान का अधिकार दिलाता है।
एक नेता समाज में बराबरी लाता है।।
एक नेता काम को पहचान बनाता है।
एक नेता संविधान को मानता है।।

● आकाश, एमजीजे, (जयपुर)

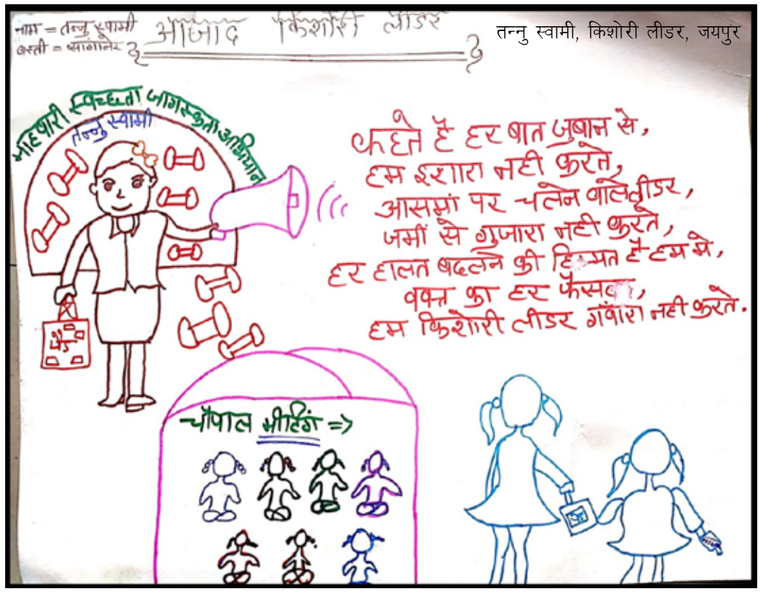

तन्नु स्वामी, किशोरी लीडर, जयपुर

नेतृत्व की कमान, नहीं थी आसान

नेतृत्व की कमान जब मुझे थमाई।
मैं उसे अच्छे से संभाल न पाई।।
शायद मुझमें ही कुछ कमी आई।
जब मैंने घरवालों को करोना।।
वैक्सीन पर समझाया।
घरवालों को कुछ समझ न आया।।
तब कोरोना वैक्सीन मैंने खुद पर लगवाई।
जब मुझे कुछ नहीं हुआ तब जाकर ये बात घरवालों को समझ आई।
कि वैक्सीन से नहीं है कोई हानि।
वक्त रहते ही लगवा लो नहीं तो बाद में होगी बहुत परेशानी।।
नज़दीकियों से थोड़ा दूरी बनाएं।
सैनीटाइजर उपयोग में लाए, मास्क लगाएं।।

● सीमा, ट्रेनी, उत्तरी दिल्ली

उत्तरदायी नेतृत्व एक नेता के रूप में आत्म-जवाबदेही और जिम्मेदारी लेने पर ध्यान केंद्रित करता है, सहकर्मियों के साथ बात करता है, और खुद को अपडेट करता रहता है, चार आवश्यक गुण हैं जो उत्तरदायी नेता को चलाते हैं: जिज्ञासा, सहानुभूति, विनम्रता, लचीलापन

समस्या का समाधान और स्त्रियों का सम्मान

जो अनिति से लड़ता है,
जो दुर्गुणों से दूर रहता है,
जो समस्याओं का समधान कर देता है।
जिससे जोश के साथ होश भी है,
जो आत्मसम्मान से परिपूर्ण भी है,
जो समस्याओं का समाधान निकालता है,
ज़रूरी नहीं पुरुष ही इतिहास रचता है,
स्त्री भी अब इतिहास रचती है
ओलम्पिक का दौर हो या चांद पर पहुंचने का सम्मान
बॉर्डर पर नेतृत्व करना हो या करनी हो तोपो से बौछार
गाड़ी चलानी हो या हवाईजहाज
रूकती नहीं अब इनकी उड़ान,
हर क्षेत्र में स्त्रियों ने सफलता पाई
इसलिए अब नेतृत्व की है उसकी जिम्मेदारी,
आत्मसम्मान बढ़ाया है इसलिए स्त्रियों ने यह सम्मान पाया है।

● निधि, ट्रेनी, दक्षिणी दिल्ली

घर के बाहर हम न जाएँ, सखा सहेली सब बिसराए।
स्कूल की टीचर की याद सताए।
नानी का घर हमें बुलाए शॉपिंग के लिए
मन ललचाए बर्थडे फीका पड़ जाए।।
कोरोना तुझसे नहीं डरते हममें हैं तुमसे लड़ने का दम।
सोशल डिस्टेसिंग निभाएंगे गुड सीटिजन बनकर दिखाएंगे।।
सरकार के रूल्स अपनाएंगे घर में बैठकर
तुझे हराएंगे।
और फिर अपना जीवन खुशहाल बनाएंगे।

● शबनूर, ट्रेनी, पूर्वी दिल्ली

मैंने कोरोना काल में आपने गली वालों की मदद की उनको पुलिस वालों से बचाया।
मैंने कोरोना काल में सब्जियाँ बेंचकर अपना घर का खर्चा चलाया।।
मैंने कोरोना काल में आपनी बहन को पढ़ाया।
मैंने कोरोना काल में अपने दोस्तो को काम पर लगवाया।
मैंने कोरोना काल में अपने स्कूल में राशन बंटवाया।
मैंने मन्दिर में भंडारा भी बंटवाया।

● अंशूल, एमजीजे, दिल्ली

कोविड - चुनौती भी, सावधानी भी

मैंने कोरोना के समय जिनका राशन कॉर्ड नहीं बना था उन सभी व्यक्ति को राशन ई-कूपन के द्वारा लोगों को राशन दिलाया। मैं इस दौरान स्कूल में जाकर राशन बांट रहा था और सभी लोगों को फ्री राशन की जानकारी दे रहा था। जो राशन हमें मिला वो हमने ज़रुरतमंद लोगों को मुहैया करवाया और बच्चों को करोना से दूर रखने के उपाए एवं सावधानियां बताई। मास्क पहनने के लिए जागरूक किया।

मैं कोरोना के समय में घर में अपना काम स्वयं करने लगा था कोरोना समय में कभी-कभी जल्दी उठकर सभी के लिए चाय बनाता था और मैं अपने कपड़े खुद धोता था।

मैंने कोरोना काल में लोगों को जानकारी दी कि सभी व्यक्ति मास्क पहने और सैनेटाइजर साथ रखें और दो गज़ की दूरी बनाए रखें।

मैंने इस दौरान पोस्टर बनाकर दीवार पर लगाए। जिससे लागों को कोविड-१९ से बचने के तरीके पता लग सके। कोरोना के समय हमने आपने घर और गली के लोगों के साथ मिलकर मास्क और सनेंटाइजर भी बांटे। स्वयं सहायता समूह के साथ मिलकर कपड़े के मास्क सिलवाने का कार्य करवाएगा और महिलाओं को खाली समय में आर्थिक मदद के लिए खुद आत्मनिर्भर बनाया।

स्कूल बंद थे तो हमने बच्चों को घर में रहकर पढ़ाई करने और खेलने के लिए जागरूक किया। अभिभावकों को बच्चों के साथ खेलने व उनका मन पढ़ाई में लगे इसके लिए हर रोज़ नई-नई गतिविधियाँ करवाई।

● अज़हरुद्दीन मिर्ज़ा, दिल्ली

एक नेता की पहचान, हो कर्मठ और अच्छा इंसान!

मेरी सोच में एक नेता किसी भी रूप में दूसरों की मदद करता है किसी भी तरह की परेशानी को दूर कर सकता है। उसके लिए ज़रूरी नहीं है कि वह पढ़ा-लिखा या अमीर हो उसके मन में दूसरों की मदद की भावना होनी चाहिए। चाहे वह मदद भूखे इन्सानों के लिए हो या भूखे जानवरों के लिए। यदि आप किसी भी भूखे लोग या जानवरों की मदद करते हैं खाना खिला सकते हैं तो आप एक अच्छे नेता हैं।

कोविड-19 में लॉकडाउन के समय में मैंने देखा कि लोग बेरोज़गारी के कारण दो समय के खाने के लिए भी मजबूर हो गए थे। उस समय सबसे बड़ी समस्या लोगों के पास राशन की थी। मैंने उस समय अपनी परेशानी को ना देखते हुए खाना बनाकर लोगो में बांटा मुझे बहुत अच्छा लगा कि मैंने लोगों को खाना खिलाया। उनके चेहरों की वो खुशी मैं कभी नहीं भूल सकती। वो खुशी मेरी लाइफ मे हर खुशी से बड़ी है।

● मीनाक्षी ट्रेनी, जयपुर

नेता कोई भी बन सकता है। ज़रूरी नहीं जेन्टस ही नेता हो लेडीज भी बन सकती है। अगर सही सोचने की शक्ति है तो कोई भी नेता बन सकता है, पर एक लेडीज सबसे बेस्ट नेता बन सकती है क्योकि वह बचपन से ही सभी परेशानी सहन करती व देखती रहती है। नेती वही बन सकता हैं जो विकलांग, अनाथ बच्चों, बड़े बुजुर्गों की मदद कर सके। जो वह कहें उनके काम को करें। असल नेता वह होता है जो खुद की परेशानी को भूलकर दूसरों की मदद करें।

● मनीषा, जयपुर, ट्रेनी

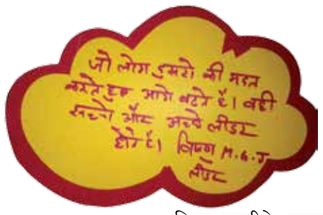

विष्णु, एमजीजे, जयपुर

महिला बन सकती हैं बेहतर नेता

पुरूष से ज़्यादा महिला अच्छी नेता इसलिए बन सकती है क्योंकि वह संघर्ष करके लोगों की समस्याओं को सुलझाती है। मैंने खुद अनुभव किया एक महिला को जब जानकारी होती है तो वह दूसरी महिला वह लोगों को समझाती है उनकी मदद करती है लोग भी एक महिला या किसी भी नेता की बात तब सुनते हैं। जब वह अपनी परेशानी से लड़ना चाहते है संघर्ष करना चाहते है। महिलाएं हौसला व हिम्मत देती हैं।

मेरी सोच में नेता केवल एक राजनीतिक नेता ही नहीं अगर किसी व्यक्ति में अपनी बात बोलने व रखने का जज़्बा हो तो वह भी नेता हो सकता है। उसकी हमेशा यही कोशिश रहती है कि वह लोगों की ज़्यादा से ज़्यादा मदद करें। नेता में धैर्य, लोगों की बात सुनने का गुण होना चाहिए। वैसे मेरी नज़र में पुरुष से ज़्यादा महिला अच्छी नेता हो सकती है क्योंकि पुरुष केवल बाहर की मदद कर सकता है जो दिखाई देती है। एक महिला नेता बहुत संघर्ष के बाद इस मंजिल तक पहुंचती है इसलिए वह महिलाओं की सिर्फ बाहरी ही नहीं बल्कि आन्तरिक स्थिति को समझने का हुनर रखती है इसलिए उनके हक़ के लिए आख़िर तक लड़ती है।

● रेखा, ट्रेनी, जयपुर

जेंडर के आधार पर नेता नहीं चुनना चाहिए। महिला और पुरुष भी नेता हो सकता है। नेता एक बार को पढ़ा लिखा न हो बल्कि उस नेता में यह हुनर होना चाहिए कि वह सब की मदद करे। सबके लिए सोचे और सब की मदद के लिए आगे आए एक नेता जाति-समाज को ना देखे।

हमारे घरों के आस-पास जो घरो में जाकर काम करती है उन्होंने मुझसे मदद मांगी कि हमारी लिस्ट बना दो पार्षद के पास चलो मैंने उनकी मदद की और उनके आधार कार्ड लेकर आंगनबाड़ी में जाकर ज़रूरत का सामान गेहूँ, दाल-चावल दिलवाया। जहां सनेटरी पैड बांटा जाता था वहां सबको घर-घर जाकर बोलती थी।

उन्होंने मुझे छोटा सा काम बताया लेकिन मुझे बहुत अच्छा लगा कि किसी ने मुझसे कुछ काम बताया और मुझे बहुत खुशी हुई। अगर वह और भी कोई काम बताएंगी तो मैं करूंगी।

● गंगा, ट्रेनी, जयपुर

घर की ज़िम्मेदारी और मर्दों की भागीदारी!

भारत में लॉकडाउन 22 मार्च, 2020 को लगा जिस कारण भारत को कई समस्याओं का सामना करना पड़ा। हमने कोरोना के समय अपने घर पर मम्मी और बहन को इतना ज़्यादा काम करते देखकर अपने आप पर शर्मिंदगी महसूस हुई। इसलिए हमने अपने घर पर मम्मी और बहन की मदद की जैसे - पानी भरने पानी के प्लांट जाता था, बाजार से सब्जियां लेने जाता था और अपने कपड़े खुद ध ोता था। कोरोना काल में मम्मी और पापा के घर बैठ जाने से घर में पैसो की समस्या उत्पन हुई जिस कारण मैंने गलियों-गलियों में जाकर सब्जियां बेचकर घर का खर्चा चलाया। हमारे मोहल्ले में पुलिस वालों के कारण मुझे सब्जियां बेचने में बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ा जिससे घर का खर्चा बहुत मुश्किल पड़ने लगा। मुझे समझ में आया कि हमारे माता-पिता कैसे पैसा कमाते हैं।

कोरोना काल में मेरी गली में एक किराएदार आया था उस व्यक्ति को १०वीं कक्षा में एडमिशन कराना था परंतु उसको एडमिशन कराने की जानकारी नहीं थी। मैंने उसको एडमिशन कराने की जानकारी दी और उसकी मदद की।

कोरोना में आज़ाद फाउण्डेशन की मीटिंग भी अटेंड की। जिसमें हमें बताया जाता था कि लड़कियों का सम्मान करो घर में ज़्यादा से ज़्यादा मदद करो।

● संजू, एमजीजे, दिल्ली

मैं अपनी मम्मी को लीडर मानती हूँ क्योंकि मेरी मम्मी में वो क्वालिटी है जो एक लीडर में होनी चाहिए। मेरी मम्मी हमारी बातों को ध्यानपूर्वक सुनती हैं और उन पर सोचती हैं। मेरी मम्मी में जो लीडर की क्वालिटी है उसमें से वही क्वालिटी मेरे अंदर भी हैं। क्योंकि मैं सबकी बातों को सुनती और समझती हूँ, और मैं सबको एक साथ लेकर आगे बढ़ना चाहती हूँ। मेरे घर में आर्थिक समस्याएं आई लेकिन मेरी मम्मी ने मेरी पढ़ाई बीच में छुड़वाई नहीं।

● आशी, ट्रेनी, दक्षिणी दिल्ली

“एक औरत हर रूप में नेता होती है। एक माँ, एक गृहणी, एक बेटी हो या फिर किसी दफ्तर में कर्मचारी, महिलाएँ हर एक भूमिका को बख़ूबी निभाने का हुनर जानती हैं और यही गुण उन्हें हर कदम पर एक अच्छा नेता साबित करता है।”

पक्षी स्वतंत्र, पिंजरे में इंसान

सारे विश्व में सन्नाटा है।
सड़के सूनसान यूं पड़ी है।
देखों... देखों दोस्तो ...
कोरोना की इंसान पर कैसी मार पड़ी है।
जहां स्वतंत्र है पक्षी आज।
वहीं इंसान पिंजरे में खड़े है।।
जैसा करोगे वैसा भरोगे।
वही बात घूम फिर सामने खड़ी है।।
यूं तो महामारी का प्रकोप।
हर सौ साल बाद आया है।।
कभी प्लेग, कभी हैजा।
अब कोरोना ने हाहाकार मचाया है।।
आज ऐसा लगा है जैसे ।
चीन ने किया हो कोई जादू टोना।।
क्योंकि पूरा विश्व बोल रहा है।
हाथ ना मिला हो सकता है कोरोना।।

● अंजलि, ट्रेनी, उत्तरी दिल्ली

संबंध-आधारित संगठन बनाने के लिए चिंतनशील नेतृत्व महत्वपूर्ण है। यह तीन महत्वपूर्ण कौशलों की विशेषता हैरू आत्म-जागरूकता, सावधानीपूर्वक अवलोकन और लचीली प्रतिक्रिया।

एक लड़की थी जो डरती थी, रोती थी
उसकी खुद की सोच थी लेकिन वो एक लड़की थी
इसलिए अपनी सोच को
ध्यान की वो लड़की है उसे
ये सोचने का हक नहीं है
वो लड़की सोचती थी 12वीं
पास होकर घर में ही
अम्मी के साथ काम सीखना
है लेकिन 11वीं में ही उसकी
जिंदगी में एक नया मोड़ आया
उससे उसका डर बाहर लाया
वो अपने बारे में सोचने लगी वो लड़की
अपने सपनों के बारे में सोचने लगी
लेकिन परिवार समाज ने पूरी कोशिश
की लेकिन अब आज़ादी के सपनों
से रम गई थी पूरी कोशिश की और
लड़की ने भी अपने सपनों को
टूटने नहीं दी आज वह
और आज़ाद किशोरी लीडर बन चुकी है
आज बोहत गर्व महसूस करती है
थैंक्यू आज़ाद टीम मुझे आज़ादी दिलवाने के लिए

● नाज़रीन, आज़ाद किशोरी, जयपुर

मेरी उड़ान

सपनों के आसमान में भरूंगी उड़ान
पंखों को फैलाकर नापूंगी आसमान
न होगी थकान न होगा अभिमान
ज़िम्मेदारियों के संग करूंगी हर काम
परिवार को आगे बढ़ते हुए देश की तरक्की
मैं लगाऊंगी
चार चांद, सत्ता हो या घर सब पर छपेगा
मेरा ही नाम
पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर बढ़ाऊंगी
देश की शान
जो अब तक समझ न पाए है उनको ही
समझाना है।
स्त्री हो या पुरुष दोनों हैं बराबर
जग में यही ज्ञान फैलाना है।

● सीमा, ट्रेनी, उत्तरी दिल्ली

मैं आज़ाद फाउण्डेशन से तीन साल से जुड़ी हुई हूँ। आज़ाद से जुड़ने से पहले मुझे ये तक नहीं पता था कि लीडर कौन होता है? पर हमारी स्कूल में ट्रेनिंग होने के बाद मैं पहली बार 12 दिन के कैंप में गई और मैंने अपने मारे में जाना। लीडर के क्या-क्या गुण होते है उसके बारे में जाना और इसी गुण को बरकरार रखते हुए मैं आज चौपाल और अड्डा मीटिंग करती हूँ। इसके साथ ही मैं जॉब कर रही हूँ और इस कोरोना काल में मैंने ३०० लोगो को वैक्सीनेशन करवाया है और सेनेटाइजेशन इसके अलावा सेनेटरी, मास्क, राशन किट इत्यादि का डोनेशन किया। चिरंजीवी योजना के तहत मैंने १५०० लोगों का रजिस्ट्रेशन करवाया है। मैं इस लीडर के गुण को आगे तक बना कर रखना चाहती हूँ और ऐसे ही कार्य करना चाहती हूँ। लीडर बनने का मतलब अधिकार जताना, या शासन करना नहीं है। इसका मतलब है लोगों को वो सब, करने में समर्थ बनाना। जिसे करने की वो कल्पना भी नहीं कर सकते। एक लीडर का काम है, लोगों को वहां तक पहुंचाना जहां वो नहीं जा सकते थे।

● ज्योति पंडित, आज़ाद किशोरी, जयपुर

प्रियंका कुमारी, ट्रेनी, कोलकाता

दुनिया का दस्तूर...

इस दुनिया के दस्तूर से कहां कोई बचता है।
गलती करे कोई भी, मगर बेकसूर ही फंसता है।
लड़का-लड़की में कोई अंतर नहीं।
लड़का-लड़की में कोई अंतर नहीं बोलकर,
लड़की का लड़को से आगे निकल जाना
आज भी सुर्खियों में चमकता है।
मामला कुछ भी हो मगर ये ज़माना
तो लड़की को ही गलत समझता है।
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के बीच में
समाज बेटो पे नज़र क्यों नहीं रखता है।
बेटो को सही व गलत की पहचान कराना,
क्यों किसी को ज़रुरी नहीं समझाता है।
घर में लड़की बड़ी हो या छोटी!
घर में लड़की बड़ी हो या छोटी,
हुकुम तो उस पर ही चलता है।
कल जाना है किसी और घर,
ये बोल अपना घर
पहले ही पराया सा लगने लगता है।
बेटी और बहू में क्यों इतना फर्क
इसके बीच का दायरा,
आज भी अखरता है।
तरीको के पुल बांध बेटी के पर
बहु का काम कहां किसी को जंचता है।
नारी सम्मान की बात कर!
नारी सम्मान की बात कर,
घर रसोई में नर का होना
आज भी हंसी का पात्र बनता है।
ऑफिस जाने के बाद भी
घर की जिम्मेदारियों से कहां कोई बचता है।
तनख्वाह औरत की आदमी से ज़्यादा!
तनख्वाह आज भी
औरत की आदमी से ज़्यादा,
लोगों को ये कहां सही लगता है।
नए ज़माने के पुराने हम।
नए जमाने के पुराने हम,
तभी स्वतंत्र भारत,
आज भी महज एक ढकोसला है।
बात थोड़ी कड़वी है,
पर इस दुनिया के दस्तूर से
कहां कोई बचता है।
सच्च और झूठ में
सबको झूठ ही मीठा लगता है
और गलती करे कोई भी मगर
अक्सर बेकसूर ही फंसता है।
अक्सर बेकसूर ही फंसता है।

● लक्ष्मी यादव, आज़ाद किशोरी, जयपुर

हिम्मत की उड़ान!

मेरे लिए आज़ाद मेरा दूसरा घर है, और ये जो मेरा लगाओ है आज़ाद के साथ, इसकी वजह से मेरे अंदर एक आत्मसम्मान आया और मुझे हिम्मत मिली की मैं अपनी शादी में हो रही हिंसा से मुक्त हो सकूँ। मैं अपने पति से अलग अपने दो बच्चों के साथ एक किराये के घर में रह रही हूँ।

मैंने अपनी शादी में बहुत सालों तक घरेलु हिंसा का सामना किया, एक दिन बहोत हिम्मत कर के मैंने अपने और अपने बच्चों के लिए कुछ करने का फैसला किया, मैंने सोचा की अगर मैं कुछ नहीं कर पाई तो मेरी पूरी ज़िन्दगी ऐसे ही कट जाएगी और मेरे बच्चे भी पढ़ लिख नही पाएंगे।

एक दिन मेरी बेटी के टीचर ने मुझे आज़ाद के बारे में बताया, मेरे बच्चे तब काफी छोटे थे तो लेकिन कुछ दिनों के बाद मुझे नौकरी की भोत ज़्यादा ज़रूरत महसूस हुई और मैंने आज़ाद में जा कर बात करने का फैसला लिया, आज़ाद में जा कर मुझे बहुत अच्छा और सकारात्मक महसूस हुआ, वहां जा कर मुझे पता चला कि मैं अकेली नहीं हूँ जो इतना कुछ झेल रही है, मेरी जैसी और भी औरतें हैं, मुझे उनसे मिल कर बहुत अच्छा लगा।

मेरी ट्रेनिंग शुरू की और देखते देखते मेरा लाइसेंस भी बन गया और आज मैं फ्लिप्कार्ट में काम कर रही हूँ। मुझे अपनी नौकरी बहोत पसंद है, मैं हमेशा कोशिश करती हूँ कि पूरी मेहनत और लगन से काम करूँ और सब से ज़्यादा डिलीवरी कर सकूँ, पहले भी मैंने 65-70 डिलीवरी की हैं एक दिन में जिसकी वजह से मुझे सब से अच्छी "विश मास्टर" का ख़िताब मिला और मेरी कंपनी ने मुझे सम्मानित भी किया। मुझे लगता है कि अगर हमारे अन्दर हिम्मत है और हमें सही लोगों का साथ और नेतृत्व मिल जाता है तो हम सब कुछ बहुत आसानी से कर पाते हैं। अब मुझे लगता है कि मेरे सारे सपने पूरे हो जायेंगे।

● ज्योति शॉ, फ्लिप्कार्ट में कार्य करती हैं, कोलकाता

नीचे दी गई कविता कमला भसीन जी की लिखी हुई है। वह कर्मठ, निडर, नारीवादी कार्यकर्ता रही हैं। जिन्होंने हमेशा सामूहिक नेतृत्व को बढ़ावा दिया है। हमारा अगला आज़ाद परिंदे का अंक कमला जी के याद और सीख पर प्रकाशित किया जाएगा।

हम औरतें जड़ों सी हैं

और... हमारी अपनी जड़ें भी हैं
इन्हीं जड़ों पर खड़े हैं हम
इन्हीं की बदौलत
लड़े और चुपचाप आगे बढ़े हैं हम
वे काटते हैं हमें ऊपर से
हम बढ़ते और फैलते जाते हैं बीच से
अपने आसपास की और जड़ों से
मिलते और जुड़ते रहेंगे हम
फिर नीचे से हिलाएंगे
बुनियादें और हमारतें
उनके जुल्मों की

~ कमला भसीन

कोशिश करने वाले की हार नहीं होती

कोशिश कर हल निकलेगा,
आज नहीं तो कल निकलेगा।
अर्जुन के तीर सा सध,
मरूस्थल से भी जल निकलेगा।।
मेहनत कर पौधों को पानी दे,
बंजर ज़मीन से भी फल निकलेगा।
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे,
फ़ौलाद का भी बल निकलेगा।।
जिंदा रख दिल में उम्मीदों को,
गरल के समुंदर से भी गंगाजल निकलेगा।
कोशिश जारी रख कुछ कर गुज़रने की,
जो है आज थमा-थमा सा चल निकलेगा।।

● काजल, ट्रेनी, दक्षिण दिल्ली

पाठकों के लिए विशेष सूचना

आप में से जो भी अखबार के लिए लिखना चाहते हैं, सबके साथ बाँटना चाहते हैं ... अपनी कहानी, कोई रोचक अनुभव, कोई संदेश या ख़ास खबर, कोई चित्र या फोटो, शेर–ओ–शायरी, गीत–चुटकुला या विचार, चिंताएँ, कुछ भी, तो ...

संपादकः हुमा खान और रूबीना अज़ीज़

अन्य सहयोगीः परिधि यादव और अमृता गुप्ता

आर–10, फ्लैट नं. 7, दूसरी मंज़िल, नेहरू इंक्लेव, कालका जी, नई दिल्ली–110019 ● फोन : 011–49053796

वेबसाइट : www.azadfoundation.com

पुलिस	100, 0141–2619725
फायर ब्रिगेड	101
एंबूलेंस	108 / 102
वोमेन हेल्पलाइन इंडिया	1090, 1091
चाइल्ड हेल्पलाइन इंडिया	1098
कोरोना (कोविड–19) हेल्पलाइन	011–23978046, 1075
जयपुर पुलिस व्हाट्सऐप हेल्पलाइन	7300363636
वोमेन हेल्पलाइन जयपुर	181
मैनेजमेंट सेंटर फॉर वोमेन – जयपुर	0141.2553763 / 64
गरीमा हेल्पलाइन – जयपुर	1090

–: डिस्क्लेमर :–

आज़ाद फाउण्डेशन और सखा दो अलग-अलग संस्थाएँ हैं।
आज़ाद एक एन.जी.ओ. है और सखा एक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी।

www.azadfoundation.com
@azadfoundationIndia
@azadfoundationIndia
@FoundationAzad